Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.4152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 3 | November - 2016

कथाकार : नरेंद्र कोहली का चरित्र

प्रा.डॉ.सौ.सुरैया इसुफअल्ली शेख.
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक,अध्यक्षा–हिंदी विभाग,
मा.ह.महाडिक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मोडनिंब .ता.माढा. जि.सोलापुर.. (महाराष्ट्र)

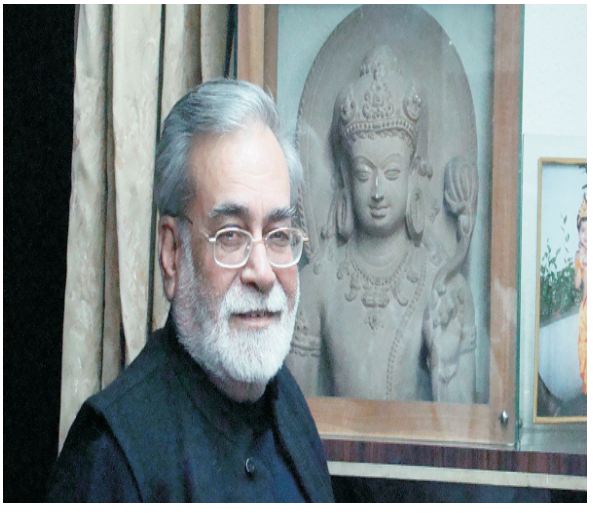

प्रस्तावना

नरेन्द्र कोहली जी आज के युग के जाने–माने कथाकार, नाटककार, निबन्धकार व्यंग्यकार और साहित्य के गंभीर अध्येता है। भारतीय अस्मिता और संस्कृति से गहरा लगाव रखनेवाले आधुनिक लेखक है। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा, सुना, भुगता, अनुभव किया उसे अपने लेखन का अंग बनाया। शोध और व्यंग के क्षेत्र में उनका स्थान सर्वप्रथम है।

नरेन्द्र कोहली जी का जन्म 6 जनवरी 1940 ई. में स्यालकोट में प्रातः साढ़े नौ बजे हुआ था। उनका शैशव कभी भी नटखट और खिलंड़रे बच्चों का शैशव नहीं था। आरम्भ में वे काफी बीमार और रोना बच्चा थे। शरीर पर फोड़े–फुंसियॉ भी बहुत थी। बचपन में अधिकांशतः अपने मॉ से ही चिपका रहते थे। शक्ति की कमी थी लेकिन ऊर्जा की कमी नहीं थी, क्योंकि वे अपने ढंग से सदा ही अधिक काम करनेवाले प्रसिध्द थे। नरेंद्र जी के शिक्षा का आरंभ छह वर्ष की आयु में देवसमाज हाईस्कूल, लाहौर में हुआ। उस समय बच्चे बाजे–गाजे के साथ स्कूल भेजे जाते थे, पर कोहली जी उतने समर्थ नहीं थे। अतः उनके पिताजी उन्हें अपने साथ ले गए थे। रास्ते में कहीं से सवा रूपये के लड्डू खरीद लिए थे। लड्डू मास्टर रूडासिंह के हवाले कर कोहली जी को कक्षा में बैठा दिया गया था। कोहली जी ने जमशेदपुर को–ऑपरेटींग कॉलेज से 1961 ई. में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। एम.ए. की उपाधि रामसज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से 1963 में उत्तीर्ण की। और इसी विश्वविद्यालय से 1970 ई. में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने पहली नौकरी दिल्ली के जी.जी.डी.ए.वी.(सांध्य) कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक के रूप में की। दूसरी नौकरी दिल्ली के मोतीलाल नेहरू कॉलेज में 1965 ई. में. आरंभ की और 1 नवंबर 1995 को पचपन वर्ष की अवस्था में स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण कर लिया।

1965 ई.में उनका विवाह डॉ.मधुरिमा के साथ हुआ। डॉ.मधुरिमा कोहली दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए.पीएच.डी.है। वे दिल्ली के कमला नेहरू कॉलेज के हिन्दी विभाग में अध्यापक के रूप में 1964 ई. से कार्यरत थी। अब रीडर के पद पर अवकश ग्रहण कर लिया है।उनके बड़े बेटे कार्तिकेय अब दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए., एम.फिल. कर रामलाल आनंद (सांध्य) कॉलेज, दिल्ली में अर्थशास्त्र पढ़ा रहे।और छोटे–बेटे अगस्त्य जो संयुक्त राज्य अमेरिका में नेटवर्क अभियंता के रूप में कार्यरत है।

नरेंद्र कोहली जी को लिखने और छपने की इच्छा बचपन से ही थी। छठी कक्षा में कक्षा की हस्तलिखित पत्रिका में पहली रचना प्रकाशित हुई। वे उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार तथा व्यंग्यकार के रूप में हमारे सामने आते है। वे अपने समकालीन साहित्यकारों से पर्याप्त भिन्न है। साहित्य की समृध्दि तथा समाज की प्रगति में उनका योगदान प्रत्यक्ष है। उन्होंने प्रख्यात कथाऍं लिखी है, किन्तु वे सर्वथा मौलिक है। वे आधुनिक है, किन्तु पश्चिम का अनुकरण नहीं करते। भारतीयता की जडों तक पहुँचते है, किन्तु पुरातनपंथी नहीं है।

1960 ई. मं नरेन्द्र कोहली की कहानियॉ प्रकाशित होनी आरंभ हुई थी, जिनमें वे साधारण पारिवारिक चित्रों और घटनाओं के माध्यम से समाज की विडंबनाओं को रेखांकित कर रहे थे। 1965 ई.के आस–पास वे व्यंग्य लिखने लगे थे। उनकी भाषा वक्र हो गई थी और देश तथा विदेश राजनीति की विडंबनाऍं सामने आने लगी थी। उन दिनों लिखी गई अपनी रचनाओं में उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन की अमानवीयता, क्रूरता तथा तर्कशून्यता के दर्शन कराए। हिन्दी का सारा व्यंग्य साहित्य इस बात का साक्षी है कि अपनी पीढ़ी में उनकी सी प्रयोगशीलता, विविधता तथा प्रखरता कहीं और नहीं है।

उन्होंने पारिवारिक और सामाजिक उपन्यासों की भी रचना की किन्तु केवल सामाजिक चित्रण तथा विडंबनाओं और विकृतियों की भर्त्सना मात्र से उन्हें संतोष नहीं हुआ। वे कुछ बहुत सार्थक करना चाहते थे। उन्होंने अनुभव किया कि जीवन के संकीर्ण, संक्षिप्त तथा सीमित चित्रण से साहित्य अपनी परिपूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता न समाज कही उससे अधिक लाभान्वित हो सकता है। हीन वृत्तियों के चित्रण से हीनता तथा हीन भावनाओं की वृध्दि होगी। अतः साहित्य का लक्ष्य है, जीवन के उदात्त, महान् तथा सात्विक पक्ष का चित्रण करना।

नरेन्द्र कोहली जी ने रामकथा से सामग्री लेकर चार खंडों में 1800 पृष्ठों का एक बृहदाकार उपन्यास 'अभ्युदय' लिखा।

कदाचित संपूर्ण रामकथा को लेकर, किसी भी भाषा में लिखा गया, यह प्रथम उपन्यास है। इसलिए समकालीन, प्रगतिशील, आधुनिक तथा तर्काश्रित है। इसकी आधारभूत सामग्री भारत की सांस्कृतिक परंपरा से ली गई है, इसलिए इसमें जीवन के उदात्त मूल्यों का चित्रण है, मनुष्य ही महानता तथा जीवन की अबाधता का प्रतिपादन है। हिन्दी का पाठक जैसे चौंक कर, किसी गहरी नींद से जाग उठा। वह अपने संस्कारों और बौध्दिकता हे व्दंद से मुक्त हुआ। उसे अपने उदृदंड प्रश्नों के उत्तर मिले, शंकाओं का समाधान हुआ। इस कृति का अभूतपूर्व स्वागत हुआ और हिन्दी उपन्यास की धारा की दिशा ही बदल गई।

नरेन्द्र कोहली जी ने एक उपन्यास 'अभिज्ञान' कृष्ण कथा को लेकर लिखा। कथा राजनीतिक है। निर्धन और अकिंचन सुदामा को सामर्थ्यवान श्रीकृष्ण, सार्वजनिक रूप से अपना मित्र स्वीकार करते हैं, तो सामाजिक, व्यावसायिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सुदामा की साख तत्काल बढ़ जाती है।

किन्तु इस कृति का मेरूदंड़ भगवद्गीता का कर्म सिध्दांत है। इस कृति में न परलोक है, न स्वर्ग और नरक, न जन्मांतरवाद। कर्म–सिध्दांत को इसी पृथ्वी पर एक ही जीवन के अंतर्गत, ज्ञानेंद्रियों और बुध्दि के आधार पर वैज्ञानिक सिध्दान्तों के अनुरूप व्याख्यायित किया गया है। वह भी एक सरस उपन्यास के एक रोचक खंड़ के रूप में। यह अद्भुत है, अभूतपूर्व है। इस तर्क–शैली की किसी भी रूप में अवहेलना नहीं कर सकते।

तब नरेन्द्र कोहली जी ने महाभारत–कथा के आधार पर, अपने नए उपन्यास 'महासमर' की रचना आरंभ की। महाभारत एक विराट कृति है, जो भारतीय जीवन, चिंतन–दर्शन तथा व्यवहार को मूर्तिमंत रूप में प्रस्तुत करती है। नरेन्द्र कोहली ने इस कृति को अपने युग में पूर्णतः जीवंत कर दिया है। इन्होंने अपने इस उपन्यास में जीवन को उसकी संपूर्ण विराटता के साथ अत्यंत मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जीवन के वास्तविक रूप से संबंधित प्रश्नों का समाधान वे अनुभूति और तर्क के आधार पर देते है। इस कृति में वे महाभारत पढ़ने बैठेंगे और अपना जीवन पढ़कर उठेंगे। युधिष्ठिर, कृष्ण, कुंती, द्रोपदी, बलराम, अर्जुन भीम तथा कर्ण आदि चरित्रों को अत्यंत नवीन रूप में देखेंगे किंतु नरेन्द्र कोहली जी की मान्यता है कि वही उन चरित्रों का महाभारत में चित्रित वास्तविक स्वरूप है।

नरेन्द्र कोहली जी ने एक और उपन्यास–श्रृंखला आरंभ कर पाठकों को चकित कर दिया। यह है, 'तोड़ो कारा तोड़ो'। यह शीर्षक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एक गीत की एक पंक्ति का अनुवाद है किन्तु उपन्यास का संबंध स्वामी विवेकानंद की जीवनकथा से है। यह कार्य सबसे कठिन था। स्वामीजी का जीवन निकट अतीत की घटना है। उनके जीवन की सारी घटनाएँ सप्रमाण इतिहासांकित है। इसमें उपन्यासकार की अपनी कल्पना अथवा चिंतन के लिए कोई विशेष अवकाश नहीं है। अपने नायक के व्यक्तित्व और चिंतन से तादात्म्य ही उनके लिए एक मात्र मार्ग है।

और फिर स्वामीजी की प्रामाणिक जीवनियों के पश्चात उपन्यास की आवश्यकता ही क्या थी? शायद उपन्यास की आवश्यकता उन लोगों के लिए थी, जो स्वामी जी से प्रेम तो करते थे किन्तु उनकी जीवनियों अथवा वैचारिक निबंधो को पढने, समझने और धारण करने की क्षमता नहीं रखते, अथवा उसमें रूचि नहीं रखते। नरेन्द्र कोहली के इस सरस उपन्यास के प्रत्येक पृष्ठ पर, उपन्यासकार के अपने नायक के साथ तादात्म्य को देखकर पाठक चकित रह जाता है। स्वामी विवेकानन्द का जीवन बंधनों तथा सीमाओं के अतिक्रमण के लिए सार्थक संघर्ष था। बंधन चाहे प्रकृति के हो, समाज के हो, राजनीति के हो, धर्म के हो, अध्यात्म के हो। नरेन्द्र कोहली के शब्दों में, ''स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व का आकर्षण, आर्कषण नहीं जादू, जादू जो सिर पर चढकर बोलता है। कोई संवेदनशील व्यक्ति उनके निकट जाकर सम्मोहित हुए बिना नहीं रह सकता। और युवा मन तो उत्साह से पागल ही जो जाता है। कौन सा गुण था, जो स्वामीजी में नहीं था। मानव के चरम विकास की साक्षात मूर्ति थे वे। भारत की आत्मा और वे एकाकार हो गए थे। उन्हें किसी एक युग, प्रदेश, संप्रदाय अथवा संगठन के साथ बंधा देना, अज्ञान भी है और अन्याय भी। ''ऐसे स्वामी विवेकानन्द के साथ तादात्म्य किया है नरेन्द्र कोहली ने। उनका यह उपन्यास ऐसा ही तादात्म्य करा देता है।

नरेन्द्र कोहली एक प्रगतिशील लेखक है, उन्होंने सामाजिक समस्याओं एवं प्रश्नों को व्यापक रूप में उठाने का प्रयास किया है। उन्होंने वर्तमान समाज एवं परिवार के बदलते–टूटते, बनते–बिगडते सम्बन्धों के अनेक पहलुओं पर विचार किया है। उन्होंने प्रायः बदलते हुए जीवन मूल्य तथा बदलते हुए परिवेश को बड़ी तत्परता के साथ चित्रित किया है। उन्होंने अपने साहित्य के व्दारा सामाजिक प्रश्नों और समस्याओं को किसी एक ही दृष्टि से न उठाकर उनकी समग्रता एवं व्यापकता में उठाया है। उन्होंने व्यक्ति के मन में नही गहराईंयों में उतरकर उसकी छटपटाहट एवं तड़पन को अंकित किया है।

अतः हम कह सकते है कि, कोहलीजी ने अपने युग हा सूक्ष्म एवं वास्तव अध्ययन किया है। अपने युग की समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में यथार्थ रूप से चित्रित करने का प्रयास किया है। प्रायः उनके सभी साहित्य में समाज में चित्रित विभिन्न समस्याओं को उभारा है। उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्या को बड़ी सूझ–बूझ के साथ उठाया है। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होता है। समाज मे होनेवाले बदलाव को वह अंकित करता है। कोहलीजी श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी है जिन्होंने अपने साहित्य के व्दारा वास्तविकता के साथ समस्याओं को पकड़ने का प्रयास किया है।

संदर्भ :

1.कहानीकार नरेन्द्र कोहली – डॉ.सुरैया शेख.
2.नरेन्द्र कोहली के विषय में – सं.कार्तिकेय कोहली.
3.हिन्दी साहित्य और साहित्यिक विमर्श – डॉ.सुरैया शेख.